उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय 4

वाचाओं के प्रभाव

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय...1

वाचायी आदर्श..1

वाचायी संरचनाएं...2

भविष्यवाणिय सेवकाई..5

वाचायी दण्ड...6

दण्ड के प्रकार..6

प्रकृति में दण्ड...7

युद्ध में दण्ड..7

दण्ड की प्रक्रिया...8

दैवीय धैर्य...8

बढ़ी हुई गंभीरता..9

विशेष अन्त...10

वाचायी आशीषें...11

आशीषों के प्रकार...11

प्रकृति में आशीष...11

युद्ध में आशीष..12

आशीषों की प्रक्रिया..13

अनुग्रह...13

स्तर..13

अन्त..14

उपसंहार...15

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय चार

वाचाओं के प्रभाव

परिचय

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि मानवीय संबंधों में उतार-चढ़ाव पाए जाते हैं? मित्रता कई बार बहुत ही आनंददायक होती है और कई बार नहीं भी होती। कई बार वे सुरक्षित होती हैं कई बार नहीं होतीं। पिछले अध्यायों में हमने देखा है कि पुराने नियम के भविष्यवक्ता लोगों के साथ परमेश्वर की वाचा के दूत थे, और दूत होने के इस कार्य को समझने के लिए हमें यह समझना जरूरी है कि भविष्यवक्ताओं ने इस बात का अनुभव कर लिया था कि इस्राएल और परमेश्वर के बीच के संबंध में भी उतार-चढ़ाव रहे थे।

हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, "वाचाओं के प्रभाव"। इस अध्याय में हम तीन भिन्न-भिन्न विषयों को देखेंगे: पहला, हम वाचा के आदर्शों को देखेंगे। और दूसरा, हम वाचायी दण्ड को जांचेंगे- जब लोग परमेश्वर के दैवीय दण्ड के अधीन आए तो भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर की ओर से किस प्रकार कार्य किया? और फिर तीसरा, हम वाचा की आशीषों की ओर देखेंगे- परमेश्वर ने जो आशीषें अपने लोगों के लिए रखी थीं भविष्यवक्ताओं ने उनके बारे में कैसे बात की? वाचायी जीवन के इन प्रभावों को समझना हमें पुराने नियम की भविष्यवाणी को समझने में, और इसे कलीसिया और संसार के वर्तमान संदर्भ में किस प्रकार लागू करना है, इसे समझने में भी सहायता करेगा।

वाचायी आदर्श

क्या आपने कभी किसी विवाह में जाकर उन अद्‌भुत बातों को सुना है जो दुल्हा और दुल्हन एक दूसरे से कहते हैं? क्या यह सुनना अजीब नहीं होगा कि जब दुल्हा और दुल्हन अपने विवाह का आरंभ उन प्रतिज्ञाओं के साथ करें जो आदर्श नहीं हैं? क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं जब दुल्हा दुल्हन से कहे, "मैं तुम्हें अपनी पत्नी स्वीकार करता हूँ, परन्तु यह निभाना तब मुश्किल हो जाएगा जब तुम बीमार हो जाओगी"? या आप किसी दुल्हन को दुल्हे से यह कहते हुए कल्पना कर सकते हो, "मैं तुम्हें अपना पति स्वीकार करती हूँ, परन्तु तुम कभी हमें गरीब मत बना देना"? हम यह सोचेंगे कि इस जोड़े में क्या गड़बड़ी थी जिन्होंने अपने विवाह के दिन एक-दूसरे से इस प्रकार कहा, क्योंकि हम अपेक्षा करते हैं कि विवाह आदर्शों पर केन्द्रित हो। यह एक ताजा संबंध है। यह ऐसा समय है जब बातें सब वैसी ही हैं जैसा उन्हें होना चाहिए था। हम सब आशा करते हैं कि यह जोड़ा उस समय आपस में कही बातों को याद रखे जब संबंध आदर्श था।

पुराने नियम के भविष्यवक्ता जानते थे कि परमेश्वर और लोगों के बीच संबंध कुछ ऐसा ही था। वे समझ गए थे कि परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचायी संबंध में कुछ आदर्श पाए जाते थे। अब इस आदर्श संबंध को समझने के लिए हमें दो विषयों को देखना होगा: पहला, आदर्श वाचा की आधारभूत संरचनाएं; और फिर दूसरा, भविष्यवाणिय सेवाएं या फिर कि भविष्यवक्ता इन संरचनाओं पर किस प्रकार निर्भर थे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

वाचायी संरचनाएं

पिछले अध्यायों में हमने देखा कि पुराना नियम इस्राएल के साथ यहोवा की वाचाओं का वर्णन इस प्रकार करता है जैसे कि वे प्राचीन मध्य पूर्व की सुजरेन वासल संधियों के प्रारूप के समान हों। पुराने नियम के समयों में महान् सम्राट छोटे देशों के साथ संधियां या वाचाएं करते थे, और बाइबल कहती है कि यहोवा ने इस्राएल राष्ट्र के साथ ऐसी ही वाचा बांधी। जब सम्राटों ने पहली बार अपने वासल राष्ट्रों के साथ संधियां कीं तो उन्होंने कुछ ऐसे आदर्शों की घोषणा करने के साथ आरंभ किया जिन्होंने अपनी राजनीतिक व्यवस्थाओं के लिए आधारभूत संरचनाओं की रचना की।

सुजरेन वासल संधियों में कम से कम दो तत्व हमेशा प्रकट होते हैं। पहली बात यह है, प्राचीन मध्य पूर्वी संधियों ने सदैव अपने वासल राष्ट्रों की ओर सम्राट की भलाई या उपकार की ही पुष्टि की। उन्होंने महान् राजा के नाम की घोषणा की और एक ऐतिहासिक वर्णन को शुरू किया जिन्होंने लोगों के प्रति राजा द्वारा किए महान् कार्यों का बखान किया। संधियां सदैव सम्राट की दया पर ही निर्भर थीं, और सम्राट की ओर से दया का यह विषय वाचा के बाइबल के आदर्श के साथ भी मिलता है। बाइबल में प्रत्येक दैवीय वाचा का केन्द्र अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की दया थी।

वाचाओं के आदर्श में एक और तत्व है जिसे हमें कभी भूलना नहीं चाहिए, और वह है मानवीय जिम्मेदारी का तत्व। प्राचीन जगत में जिस प्रकार सुजरेन-वासल संधि में सम्राट के अधीन के राष्ट्रों से वफादारी की मांग की जाती थी, उसी प्रकार पुराने नियम की प्रत्येक वाचा में परमेश्वर के लोगों से वफादारी की मांग की जाती थी। अब हमें हमेशा याद रखना है कि वफादारी की प्रतिक्रिया दैवीय दया की प्रतिक्रिया थी — लोगों ने परमेश्वर के समक्ष अपने ओहदे को अपने कार्यों के द्वारा नहीं पाया था। परमेश्वर ने अपने अनुग्रह के आधार पर वाचाओं को स्थापित किया था। परन्तु बिना किसी अपवाद के, वाचाओं के आदर्शों में मानवीय जिम्मेदारी सदैव सम्मिलित होती है, जो कि परमेश्वर के समक्ष वफादारी के साथ रहने की अपेक्षा है।

इस बिंदू पर हमें यह सोचना चाहिए कि ये प्रत्येक आदर्श तत्व पुराने नियम की वाचा में किस प्रकार प्रवेश करते हैं। जिस प्रकार हमने पिछले अध्यायों में देखा है, पुराने नियम के भविष्यवक्ता समझ गए थे कि परमेश्वर ने वाचा के पांच संबंधों को स्थापित किया था। उसने आदम और नूह के माध्यम से संसार के सारे राष्ट्रों के साथ वाचा स्थापित की। और फिर उसने अब्राहम, मूसा, और दाऊद के साथ वाचा बांधी और इसके साथ-साथ बंधुआई के बाद के दिनों में भविष्य की नई वाचा भी स्थापित की।

आदम के साथ वाचा के बारे में एक क्षण सोचें। आदम के दिनों में परमेश्वर के उपकार उसमें प्रकट होते थे जिसमें उसने मानवजाति के लिए संसार की रचना की थी। उसने एक ऐसी सृष्टि ली जो रहने के अयोग्य और अस्तव्यस्त थी, और उसे एक अद्भुत वाटिका का आकार दिया जिसमें मानवजाति को रहना था। जैसा कि हम उत्पत्ति 1:2 में पढ़ते हैं:

> और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा थाः तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडलाता था। (उत्पत्ति 1:2)

तब परमेश्वर ने अपने स्वरूप के लिए एक स्वर्गलोक बनाया और उस स्वर्गलोक में आदम और हव्वा को रख दिया। यह दया ही वह आधार थी जिस पर परमेश्वर ने हमारे सबसे पहले पूर्वजों, आदम और हव्वा, के साथ वाचा बांधी थी। इसके साथ-साथ आदम के साथ वाचायी आदर्श में मानवीय जिम्मेदारी की भी आवश्यकता थी। परमेश्वर ने आदम को अदन की अद्भुत वाटिका में रखा, परन्तु उसने तत्काल ही गंभीर नियम लागू कर दिए। उत्पत्ति 2:16-17 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता हैः पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा। (उत्पत्ति 2:16-17)

स्वर्गलोक में भी वाचायी आदर्श में केवल परमेश्वर की भलाई ही सम्मिलित नहीं थी, परन्तु इसके साथ-साथ मनुष्यजाति की जिम्मेदारी भी शामिल थी।

यही बात नूह के साथ की गई वाचा में भी सही थी। एक ओर तो परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को विश्वव्यापी जलप्रलय से बचाया। जैसा कि उत्पत्ति 6:7-8 में लिखा है:

> तब यहोवा ने सोचा, कि मै मनुष्य को जिसकी मै ने सृष्टि की है पृथ्वी के ऊपर से मिटा दूंगा; क्या मनुष्य, क्या पशु, क्या रेंगनेवाले जन्तु, क्या आकाश के पक्षी, सब को मिटा दूंगा क्योंकि मैं उनके बनाने से पछताता हूँ। परन्तु यहोवा के अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही। (उत्पत्ति 6:7-8)

नूह की वाचा उस दैवीय अनुग्रह पर निर्भर थी जो किसी योग्यता से नहीं मिलती। फिर भी, जो वाचा परमेश्वर ने नूह के साथ स्थापित की वह मानवीय जिम्मेदारी के साथ दैवीय उपकार और दया को जोड़ती है। जब नूह जलप्रलय के बाद जहाज से बाहर निकला तो परमेश्वर ने कुछ विशेष नियमों की रचना की। उत्पत्ति 9:7 में परमेश्वर ने नूह को उसकी आधारभूत मानवीय जिम्मेदारी के बारे में स्मरण करवाया :

> और तुम तो फूलो-फलो, और बढ़ो, और पृथ्वी में बहुत बच्चे जन्मा के उस में भर जाओ। (उत्पत्ति 9:7)

दैवीय अनुग्रह और मानवीय जिम्मेदारी नूह की वाचा में प्रकट होते हैं।

आइए अब हम उन विशेष वाचाओं की ओर मुड़ें जो परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र के साथ स्थापित की थीं। आप स्मरण करेंगे कि इस्राएल के साथ पहली वाचा पूर्वज अब्राहम के माध्यम से थी। इस वाचा में परमेश्वर का अनुग्रह प्रकट होता है क्योंकि परमेश्वर ने इस परिवार को पृथ्वी के सभी परिवारों से अधिक आशीष देने के लिए चुना। जब परमेश्वर ने उत्पत्ति 12:2-3 में उससे ये शब्द कहे तो परमेश्वर ने अब्राहम को असीम अनुग्रह प्रदान किया :

> और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमंडल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे। (उत्पत्ति 12:2-3)

एक बार फिर वाचायी आदर्श में दैवीय अनुग्रह केन्द्रीय तत्व है। फिर भी, मानवीय जिम्मेदारी भी अब्राहम की वाचा के आदर्श का अभिन्न अंग थी। पूर्वज अब्राहम की जिम्मदारी कई अवसरों पर सामने आती है। उदाहरण के तौर पर, उत्पत्ति 17:1-2 में परमेश्वर ये शब्द कहता है :

> मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा। और मैं तेरे साथ वाचा बान्धूंगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊंगा। (उत्पत्ति 17:1-2)

अब्राहम की वाचा में मानवीय जिम्मेदारी सम्मिलित थी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जब मूसा के साथ परमेश्वर की वाचा की बात आती है तो आज अनेक मसीही उसे भ्रांतिपूर्ण तरीके से सोचते हैं। वे मानते हैं कि यह वाचा कार्यों पर केन्द्रित थी, परन्तु ऐसा नहीं था। और हम यह बात इस सत्य में पाते हैं कि दस आज्ञाएं एक ऐसी ऐतिहासिक प्रस्तावना के साथ आरंभ होती हैं जो प्राचीन मध्य पूर्वी सुजेरयिन संधियों की प्रस्तावनाओं से काफी मिलती जुलती थीं। कोई भी वाचा मिलने से पहले निर्गमन 20:2 में हम ये वचन पढ़ते हैं :

> मै तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है। (निर्गमन 20:2)

परमेश्वर ने अपने लोगों से अपेक्षा की थी कि वे उसकी आज्ञा मानें, परन्तु यह उस दया के कार्य के आधार पर हो जिसमें उसने उन्हें मिस्र की भूमि से बाहर निकाला था। निसंदेह, मानवीय जिम्मेदारी का दूसरा पहलू भी मूसा की वाचा में प्रकट होता है। निर्गमन 19:5 इस्राएल से इन वचनों को कहता है :

> इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। (निर्गमन 19:5)

मूसा के साथ की गई वाचा के आदर्श चरण में दैवीय अनुग्रह को मानवीय जिम्मेदारी के साथ जोड़ दिया गया था।

अब दाऊद के साथ की गई राजकीय वाचा भी दैवीय उपकार पर केन्द्रित थी। 2 शमूएल 7:8 में परमेश्वर ने दाऊद से इस प्रकार बात की :

> मैं ने तो तुझे भेड़शाला से, और भेड़-बकरियों के पीछे पीछे फिरने से इस मनसा से बुला लिया कि तू मेरी प्रजा इस्राएल का प्रधान हो जाए। (2शमूएल 7:8)

परमेश्वर ने दाऊद के परिवार को अपने लोगों के ऊपर स्थाई शासक के रूप में चुना, और यह उसने प्रेम के कारण किया न कि दाऊद की किसी योग्यता के कारण। दाऊद का राज्य इसलिए स्थापित हुआ क्योंकि परमेश्वर उसके प्रति दयालु था। इसके साथ-साथ, परमेश्वर ने मानवीय विश्वासयोग्यता की मांग के साथ दाऊद को दिए गए अनुग्रह को भी जोड़ा। सुनिए किस प्रकार भजन 89:30-32 में विश्वासयोग्यता की अपेक्षाओं को रखा गया है :

> यदि उसके (दाऊद) वंश के लोग मेरी व्यवस्था को छोड़ें और मेरे नियमों के अनुसार न चलें, यदि वे मेरी विधियों का उल्लंघन करें, और मेरी आज्ञाओं को न मानें, तो मैं उनके अपराध का दण्ड सोंटे से, और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ों से दूंगा। (भजन 89:30-32)

परमेश्वर ने दाऊद के सन्तानों से उसके अनुग्रह के बदले में उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने की अपेक्षा की।

वाचायी आदर्श के दोनों पहलू नई वाचा, जो भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि मसीहा के द्वारा आएगी, में भी प्रकट होते हैं। प्रेरित पौलुस ने इसे संक्षेप में इफिसियों 2:8-10 में रखा है :

> क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमंड करे। (इफिसियों 2:8-9)

मसीह में वाचा का आधार अनुग्रह है। परन्तु अब उन शब्दों को सुनिए जो पद 10 में आते हैं :

> क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया। (इफिसियों 2:10)

नई वाचा के आदर्श में भले कार्यों की मानवीय जिम्मेदारी भी शामिल थी।

इस बिंदू पर हमें हमारे दूसरे विषय की ओर मुड़ना चाहिए: भविष्यवक्ता इन वाचायी संरचनाओं पर किस प्रकार निर्भर थे।

भविष्यवाणिय सेवकाई

एक ओर भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के लोगों को उस करूणा की याद दिलाई जो यहोवा ने उन पर की थी। इसके साथ-साथ पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने वाचा में मानवीय जिम्मेदारी पर बहुत अधिक ध्यान दिया। उन्हें परमेश्वर द्वारा बुलाया गया था कि वे लोगों के पास जाएं और वफादारीपूर्ण सेवा की मांग को स्मरण कराएं। हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि भविष्यवक्ता जानते थे कि इस्राएल के दृष्टिगोचर समुदाय में विश्वासी और गैरविश्वासी दोनों थे। और इसी कारणवश उन्होंने वाचा में मानवीय जिम्मेदारी को जांचने वाले या प्रमाणित करने वाले आधार के रूप में देखा। वाचा के नियमों के प्रति लोगों के प्रत्युत्तर ने उनके हृदयों के सच्चे चरित्र को प्रकट किया।

एक ओर तो दृष्टिगोचर समुदाय के भीतर के अविश्वासियों ने दर्शाया कि उनके पास उद्धार देने वाला विश्वास नहीं है क्योंकि वे अपनी वाचायी जिम्मेदारियों से दूर हो गए हैं। वे उद्धार के लिए यहोवा पर भरोसा रखने में असफल हो गए है और उन्होंने उसके वफादार बने रहने से इनकार कर दिया है। वाचा का उल्लंघन करने वाले ये कुख्यात लोग परमेश्वर के दण्ड को सहेंगे। दूसरी ओर, मानवीय जिम्मेदारी की परख ने उनको भी पहचान लिया जो सच्चाई के साथ अदृश्य वाचायी समुदाय के भाग थे। अब ये वे लोग थे जो अनन्त रूप से छुटकारा पाए हुए थे। उन्होंने यहोवा में उद्धार देने वाले विश्वास को क्रियान्वित किया था और वे अनन्त जीवन के मार्ग में थे। परन्तु सच्चाई यह है कि कई बार इन लोगों को भी भविष्यवक्ताओं ने अपने विश्वास को प्रमाणित करने की चुनौती दी थी, लगभग वैसे ही जैसे नया नियम देता है। प्रकाशितवाक्य 2:7 के शब्दों को सुनें :

> जिस के कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता हैः जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूंगा। (प्रकाशितवाक्य 2:7)

इस प्रकार का विषय कि हमें इस बात को प्रमाणित करने के लिए प्रभु की आज्ञा माननी चाहिए, और कि हमारे अन्दर उद्धार प्रदान करने का विश्वास है, ऐसा विषय है जो भविष्यवक्ताओं की सब पुस्तकों में पाया जाता है।

अब हमें इस बात के प्रति सचेत रहना होगा कि हम यह न सोचें कि भविष्यवक्ता केवल इसलिए नियमवादी थे क्योंकि उन्होंने मानवीय जिम्मेदारी पर बल दिया था। परन्तु वास्तविकता यह है कि

भविष्यवक्ता समझ गए थे कि परमेश्वर का अनुग्रह आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता के हर कार्य के पीछे था। पवित्रशास्त्र की संपूर्ण शिक्षा से हम यह जानते हैं कि जब कभी भी लोग प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य बनते हैं तो यह इसलिए होता है क्योंकि प्रभु का आत्मा उनके अन्दर कार्य करता है। इसके साथ-साथ बाइबल प्रायः हमें आज्ञा मानने की जिम्मेदारी की याद दिलाती है। और क्योंकि भविष्यवक्ता जानते थे कि परमेश्वर का अनुग्रह आज्ञाकारिता के हर कार्य के पीछे था, वे कभी परमेश्वर के लोगों को आज्ञाकारिता और विश्वासयोग्यता की बुलाहट देने से नहीं हिचकिचाए।

वाचा के प्रभावों की हमारी जांच में अब तक हमने वाचायी आदर्श के दो पहलुओं को देखा है। इस बिंदू पर हमें हमारे दूसरे विषय, वाचायी दण्ड, पर ध्यान देना चाहिए। वाचायी जीवन के वे प्रभाव कौनसे थे जब परमेश्वर के लोग प्रभु की सेवा से दूर हो गए थे?

वाचायी दण्ड

पूरे संसार में मानवीय प्रशासन के अनेक प्रारूप हैं। परन्तु हर मानवीय प्रशासन में एक बात अवश्य पाई जाती है: वे सब इस बात को मानते हैं कि उनके देश के लोग उनके सारे नियमों को नहीं मानेंगे, और फलस्वरूप वे अपराध और सजा की प्रणाली को स्थापित करते हैं। इसी प्रकार की बात इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा में भी पाई जाती थी। वह जानता था कि उसके लोग पापी हैं। वह जानता था कि वे उसके विरूद्ध बलवा करेंगे और इसलिए उसने अपने लोगों पर दण्ड की प्रणाली को स्थापित किया। दण्ड की इस प्रणाली में भविष्यवक्ताओं ने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। वे वाचा के संदेशवाहक थे। उन्होंने अपराधों को दर्शाया, और उन्होंने दण्ड की चेतावनी भी दी जो परमेश्वर उन्हें तब देगा जब लोग उसकी वाचा का उल्लंघन करेंगे। अब यह समझने के लिए कि भविष्यवक्ताओं ने दण्ड के संदेशवाहकों के रूप में किस प्रकार कार्य किया, हमें वाचायी दण्ड के उन दो तत्वों को समझना जरूरी होगा जो परमेश्वर ने अपने लोगों के ऊपर रखे थे। पहला, हम दण्ड के उन प्रकारों को खोजेंगे जिनकी घोषणा भविष्यवक्ताओं ने की थी, और दूसरा, हम उस प्रक्रिया को जांचेंगे जो इन दण्ड के कार्यों में प्रयोग की जाएगी। आइए पहले हम दण्ड के प्रकारों पर ध्यान दें जिनकी चेतावनी पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने उन्हें दी जिन्होंने यहोवा के साथ अपनी वाचा का जानबूझ कर उल्लंघन किया।

दण्ड के प्रकार

यह अनुभव करना बहुत ही महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने दण्ड के उन प्रकारों का आविष्कार नहीं किया था जिनकी चेतावनी उन्होंने दी थी। इसके विपरीत परमेश्वर के लोगों को जैसे दण्ड की अपेक्षा करनी चाहिए उसकी सूची के लिए उन्होंने पुराने नियम के वचनों को देखा। भविष्यवक्ताओं की शब्दावली दर्शाती है कि वे प्रायः उन अनुच्छेदों पर निर्भर रहे जो मूसा की पुस्तकों में पाए जाते हैं। ऐसे पाँच अनुच्छेद हैं जिन्होंने भविष्यवक्ताओं की अगुवाई की कि वे दण्ड के उन प्रकारों की सूची बनाएं जो परमेश्वर के लोगों को दिए जा सकते हैं: व्यवस्थाविवरण 4:25-28, व्यवस्थाविवरण 28:15-68, व्यवस्थाविवरण 29:16-29, और व्यवस्थाविवरण 32:15-43, और अंत में लैव्यवस्था 26:14-39 ने भविष्यवक्ताओं को वह सब जानकारी प्रदान की जब उन्होंने दण्ड के उन प्रकारों को समझने का प्रयास किया जो परमेश्वर अपने लोगों को देगा। इन अनुच्छेदों में इतनी सामग्री है कि उन्हें सारगर्भित करके समझना कठिन है कि वे क्या कह रहे हैं। परन्तु यह कहना सुरक्षित है कि मूसा ने ये अनुच्छेद राष्ट्र को आश्वस्त करने के लिए लिखे कि वाचायी दण्ड की दो आधारभूत श्रेणियां थीं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रकृति में दण्ड

वाचायी दण्ड का पहला प्रकार है कि परमेश्वर निरन्तर रूप से किए जाने वाले पाप का प्रत्युत्तर प्रकृति में दण्ड के साथ देगा। परमेश्वर प्राकृतिक जगत में अपनी आशीषों को हटाने की चेतावनी देता है ताकि यह संसार परमेश्वर के लोगों के लिए प्रतिकूल हो जाए। आपको याद होगा कि परमेश्वर इस्राएल को ऐसी भूमि में लेकर आया था जहां दूध और मधु की धाराएं बहती थीं। प्रतिज्ञा की भूमि की प्राकृतिक दशा परमेश्वर के लोगों के लिए एक बहुत बड़ी आशीष बनने वाली थी। परन्तु भविष्यवक्ताओं ने चेतावनी दी कि जब इस्राएल विद्रोह करेगा तो परमेश्वर इस आशीष को दण्ड में बदल देगा। अब किस प्रकार के प्राकृतिक दण्ड दृष्टिगोचर वाचायी समुदाय के विरूद्ध आएंगे? व्यवस्थाविवरण 4, 28, 29 और 32 एवं इसके साथ-साथ लैव्यवस्था 26 परमेश्वर के लोगों के विरूद्ध प्राकृतिक दण्ड के कम से कम छः बड़े प्रकारों की सूची प्रदान करते हैं। पहला, मूसा की पुस्तकों के ये अध्याय हमें बताते हैं कि परमेश्वर किसी समय इस्राएल की भूमि पर सूखा भेजेगा। यह सूखा भूमि को सुखा देगा जिससे लोग बहुत अधिक कष्ट झेलेंगे, और वहां महामारी फैलेगी। अकाल भी आएंगे जिससे लोगों के पास भोजन भी नहीं होगा, यह तब होगा जब वे जानबूझ कर प्रभु के विरूद्ध विद्रोह करेंगे। और बिमारियां उनके ऊपर आएंगी- वे ज्वर और फोड़े और गांठों और अन्य बिमारियों को सहेंगे। जंगली जानवर मानव जीवन के लिए खतरा बन जाएंगे और लोगों की संख्या कम हो जाएगी। प्रतिज्ञा की भूमि में संतानहीनता और असामयिक मृत्यु जानवरों और मनुष्यों की संख्या को कम कर देंगीं।

भविष्यवक्ताओं ने बार-बार इन प्रकारों के वाचायी दण्ड का उल्लेख किया। उन्होंने प्रायः चेतावनी दी कि परमेश्वर प्रतिज्ञा की भूमि में जीवन को असंमजस में डालने के लिए कुछ प्राकृतिक आपदाएं लेकर आएगा। उदाहरण के लिए सुनिए कि परमेश्वर ने हाग्गै 1:9-11 में क्या कहा :

> मेरा भवन उजाड़ पड़ा है और तुम में से प्रत्येक अपने अपने घर को दौड़ा चला जाता है? इस कारण आकाश से ओस गिरना और पृथ्वी से अन्न उपजना दोनों बन्द हैं। और मेरी आज्ञा से पृथ्वी और पहाड़ों पर, और अन्न और नये दाखमधु पर और ताजे तेल पर, और जो कुछ भूमि से उपजता है उस पर, और मनुष्यों और घरेलू पशुओं पर, और उनके परिश्रम की सारी कमाई पर भी अकाल पड़ा है। (हाग्गै 1:9-11)

परमेश्वर ने प्रायः अपने भविष्यवक्ताओं से घोषणा करवाई कि प्राकृतिक आपदाओं के रूप में दण्ड आने वाला है।

युद्ध में दण्ड

प्रकृति में दण्ड के अतिरिक्त हम यह भी पाते हैं कि भविष्यवक्ताओं ने युद्ध में दण्ड की घोषणा भी की थी। युद्ध प्रायः प्राकृतिक खतरों को लेकर आता है, जैसे अकाल और बिमारी, परन्तु परमेश्वर ने वाचायी दण्ड के एक प्रकार के रूप में अपने लोगों के विरूद्ध मानवीय शत्रुओं को भेजने की बात भी कही थी। मूसा के लेखनों में युद्ध के कई उल्लेख पाए जाते हैं। व्यवस्थाविवरण 4, 28, 29 और 32 एवं लैव्यवस्था 26 में हम युद्ध में दण्ड की कम से कम पाँच बड़ी श्रेणियां पाते हैं। पहली, परमेश्वर के लोग पराजय का सामना करेंगे। वे अपने शत्रुओं के हमलों के सामने खड़े नहीं रह सकेंगे। दूसरी, उनके नगरों को घेरा जाएगा। नगर उनके शत्रुओं द्वारा घेरा जाएगा और उनके निवासी कष्ट सहेंगे। फिर उनके शत्रु उनके नगरों पर कब्जा कर लेंगे। परमेश्वर के लोगों के शत्रु प्रतिज्ञा की भूमि में आ जाएंगे और उस पर अधिकार कर लेंगे। युद्ध में मृत्यु और विनाश एक अन्य वाचायी श्राप है क्योंकि परमेश्वर के अनेक लोग उनके

शत्रुओं के हाथों मारे जाएंगे। और अंत में, सबसे बदतर श्राप- परमेश्वर कहता है कि उसके लोगों को बंदी बना लिया जाएगा और बंधुआई में अन्य राष्ट्रों में तितर-बितर कर दिया जाएगा।

बार-बार भविष्यवक्ताओं ने न केवल यह घोषणा की कि परमेश्वर के लोग उनके शत्रुओं के द्वारा पराजित किए जाएंगे बल्कि उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि प्रतिज्ञा की भूमि से वे बंधुआई में भी ले जाए जाएंगे। उदाहरण के रूप में, भविष्यवक्ता मीका ने चिताया था कि यहूदी धर्म को मानने वाले अनेक लोग प्रतिज्ञा की भूमि से बंधुआई में ले जाए जाएंगे। मीका 1:16 में हम बंधुआई के इन शब्दों को पढ़ सकते हैं :

> अपने दुलारे लड़कों के लिये अपना केश कटवाकर सिर मुंड़ा, वरन अपना पूरा सिर गिद्ध के समान गंजा कर दे, क्योंकि वे बंधुए होकर तेरे पास से चले गए हैं। (मीका 1:16)

दण्ड और युद्ध की ऐसी चेतावनियां पुराने नियम के सारे भविष्यवक्ताओं में प्रकट होती हैं।

अतः हम देखते हैं कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने वाचायी दण्ड के दो आधारभूत प्रकारों की घोषणा की: प्राकृतिक आपदाएं और युद्ध। आइए अब हम उस प्रक्रिया की ओर देखते हैं जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा कि उसका उपयोग वह अपने लोगों को इस प्रकार के दण्ड देने में करेगा।

दण्ड की प्रक्रिया

भविष्यवक्ताओं ने दण्ड की किन प्रक्रियाओं की अपेक्षा की थी? भविष्यवक्ताओं ने दण्ड की प्रक्रिया मुख्य रूप से लैव्यवस्था 26:14-39 से सीखी थी। इस अनुच्छेद में मूसा ने दण्ड का वर्णन इस प्रकार किया था जैसे कि वह एक लम्बे समय तक चलता है और वह एक निश्चित प्रारूप का अनुसरण करता है। जब हम इस अनुच्छेद का आकलन करते हैं, तो हम कम से कम तीन सिद्धांतों को पाएंगे जो उस तरीके को संचालित करेगा जिसके अन्तर्गत ये दण्ड आएंगे। परमेश्वर धैर्य दिखाएगा, परन्तु दण्ड की कठोरता और अधिक बढ़ जाएगी, और इस प्रकार के दण्ड का एक विशेष अन्त भी होगा। आइए पहले हम दैवीय धैर्य के बारे में सोचें।

दैवीय धैर्य

लैव्यवस्था 26:14-39 इसे स्पष्ट करती है कि परमेश्वर अपने लोगों के प्रति बहुत धैर्य रखता है जब वे पाप करते हैं। परमेश्वर महसूस करता है कि उसके लोग बलवा करेंगे और पश्चाताप न करते हुए हठी हो जाएंगे। अतः इस अनुच्छेद में मूसा दर्शाता है कि परमेश्वर अपने लोगों के प्रति बहुत धैर्यवान रहेगा। लैव्यवस्था 26 को पाँच मुख्य भागों में विभाजित किया जा सकता है: पद 14-17, 18-20, 21-22, 23-26 और 27-39। ये सारे खण्ड परमेश्वर द्वारा यह कहते हुए आरंभ होते हैं: “यदि तुम मेरी न सुनोगे . . .” और फिर वह बताता है कि वह दण्ड के रूप में इस्राएल के साथ क्या करेगा। “यदि तुम मेरी न सुनोगे . . .” को फिर से बताना दर्शाता है कि परमेश्वर अपने लोगों को पश्चाताप करने के अनेक अवसर देने के द्वारा उनके साथ धैर्य रखने की चाहत रखता है।

परमेश्वर के द्वारा धैर्य रखने का एक संक्षिप्त वर्णन पुराने नियम की भविष्यवाणी में प्रकट होता है। योएल भविष्यवक्ता ने परमेश्वर के धैर्य के बारे में योएल अध्याय 2 में बात की जब उसने लोगों को पश्चाताप करने की बुलाहट दी। 2:13 में उसने इस्राएल से ये शब्द कहे :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> अपने वस्त्र नहीं, अपने मन ही को फाड़कर अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो; क्योंकि वह अनुग्रहकारी, दयालु, विलम्ब से क्रोध करनेवाला, करूणानिधान और दुःख देकर पछतानेहारा है। (योएल 2:13)

भविष्यवक्ता पूरी निष्ठा के साथ वाचायी दण्ड में विश्वास रखते थे, परन्तु वे यह भी मानते थे कि यहोवा अपने लोगों के प्रति बहुत धैर्य रखता है।

लैव्यवस्था 26 में वाचायी दण्ड का पहला सिद्धान्त यह है कि परमेश्वर धैर्य रखेगा। परन्तु इसके साथ-साथ दूसरा सिद्धान्त भी है — परमेश्वर के वाचायी दण्ड फिर और अधिक गंभीरता के साथ आएंगे।

बढ़ी हुई गंभीरता

जिस प्रकार लैव्यवस्था 26 के पांच खण्ड हमें बताते हैं कि परमेश्वर धैर्यवान है, वे हमें यह भी बताते हैं कि परमेश्वर अपने दण्ड की गंभीरता को बढ़ा देगा। पद 18, 21, 24 और 28 में परमेश्वर इस तरह से अपने लोगों को चेतावनी देता है: अगर वे उसके प्रति बलवा करते रहे, तो वह उन पर सात गुना अधिक दण्ड लाएगा।

लैव्यवस्था 26 का यह पहलू हमें बताता है कि वाचायी दण्ड भिन्न स्तरों में आता है। कई बार भविष्यवक्ताओं ने तुलनात्मक रूप से छोटे दण्ड की चेतावनी दी, और फिर बाद में उन्होंने किसी बड़े दण्ड के आने की चेतावनी भी दी। उदाहरण के तौर पर हम यशायाह की पुस्तक 38:1 में एक छोटे दण्ड के बारे में पढ़ते हैं :

> अपने घराने के विषय जो आज्ञा देनी हो वह दे, क्योंकि तू न बचेगा मर ही जाएगा। (यशायाह 38:1)

अब, मुझे निश्चय है कि हिजकिय्याहने स्वयं यह सोचा होगा कि यह उसके लिए एक बड़ा वाचायी दण्ड था, परन्तु पूरे राष्ट्र के संदर्भ में यह छोटा था, यहां केवल एक व्यक्ति परमेश्वर के दण्ड को सहन रहा था। परन्तु दूसरी ओर, जब हिजकिय्याहने असीरिया के हमलों से चमत्कारिक रूप से छुटकारा पाने के बाद भी स्वयं को यहोवा के प्रति समर्पित करने से इनकार कर दिया तो यशायाह ने और अधिक गंभीर दण्ड की घोषणा की। उसने घोषणा की कि एक दिन बेबीलोन के लोग पूरे यहूदा राष्ट्र पर कब्जा कर लेंगे। यशायाह 39:6 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> ऐसे दिन आनेवाले हैं, जि में जो कुछ तेरे भवन में है . . . वह सब बाबुल को उठ जाएगा . . . कोई वस्तु न बचेगी। (यशायाह 39:6)

यह कथन हिजकिय्याहके व्यक्तिगत स्वास्थ्य के बारे में दी गई चेतावनी से कहीं अधिक गंभीर था। यह पूरे राष्ट्र के लिए खतरा था। और अनेक भविष्यवक्ता इसी प्रकार के प्रारूप का अनुकरण करते थे। वे बढ़े हुए दण्ड के बारे में बात करते थे।

न केवल हम पाते हैं कि परमेश्वर धैर्य और बढ़ी हुई गंभीरता के साथ वाचायी दण्ड लाता था, बल्कि हम एक तीसरा सिद्धांत भी पाते हैं: दण्ड का अन्त प्रतिज्ञा की भूमि से बंधुआई में चले जाना है।

विशेष अन्त

लैव्यवस्था 26:27-39 का अंतिम खण्ड सचेत करता है कि परमेश्वर के लोगों के विरुद्ध आने वाला सबसे गंभीर दण्ड उनकी भूमि का विनाश और प्रतिज्ञा की भूमि से बंधुआई में जाना होगा। देखिए किस प्रकार मूसा इसे लैव्यवस्था 26:33 में रखता है :

> और मैं तुम को जाति जाति के बीच तितर-बितर करूंगा, और तुम्हारे पीछे पीछे तलवार खीचें रहूँगा; और तुम्हारा देश सूना हो जाएगा, और तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएंगे। (लैव्यवस्था 26:33)

पुराने नियम के विश्वासियों के मन में इससे किसी और बुरी स्थिति की कल्पना करना कठिन था। परमेश्वर इस्राएल को प्रतिज्ञा की भूमि पर लेकर आया था, एक ऐसी भूमि जिसमें दूध और मधु की धाराएं बहती थीं, और अब भविष्यवक्ता यह कह रहे थे कि इस भूमि से उन्हें बंधुआई में लेकर जाया जाएगा। जब तक हम बाइबल के अधिकांश भविष्यवक्ताओं की ओर आते हैं, परमेश्वर ने उन्हें पहले ही बार-बार चेतावनी दे दी थी कि वह उन्हें उनकी भूमि से बाहर भेजने वाला है। अतः हम भविष्यवक्ताओं को यह घोषणा करते हुए पाते हैं कि बंधुआई शीघ्र ही आने वाली है। उदाहरण के तौर पर, आमोस 5:26-27 में हम इन शब्दों को पाते हैं :

> तुम तो अपने राजा का तम्बू, और अपनी मूरतों को चरणपीठ, और अपने देवता का तारा लिए फिरते रहे। इस कारण मैं तुम को दमिश्क के उस पार बंधुआई में कर दूंगा। (आमोस 5:26-27)

यद्यपि मूसा ने बंधुआई के खतरे को लैव्यवस्था 26 और अनेक अन्य अनुच्छेदों में बहुत ही स्पष्ट कर दिया था, फिर भी इस्राएल के लोगों को इस पर विश्वास करना बहुत कठिन लगा। यह धारणा बहुत प्रचलित थी कि परमेश्वर कभी पूरी तरह से अपने लोगों को नहीं निकालेगा- कम से कम यरूशलेम को ज्यों का त्यों रहेगा। लोग यह भूल चुके थे कि यहोवा के साथ उनकी वाचा में मानवीय जिम्मेदारी भी निहित थी, और इसी कारण यरूशलेम की सुरक्षा के अंतिम वर्षों में भी यिर्मयाह को यह घोषणा करनी पड़ी कि नगर और मन्दिर का विनाश होने वाला है। यिर्मयाह 7:13-15 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> अब यहोवा की यह वाणी है, कि तुम जो ये सब काम करते आए हो, और यद्यपि मैं तुम से बड़े यत्न से बातें करता रहा हूँ, तौभी तुम ने नहीं सुना, और तुम्हें बुलाता आया परन्तु तुम नहीं बोले, इसलिये यह भवन जो मेरा कहलाता है, जिस पर तुम भरोसा रखते हो, और यह स्थान जो मैं ने तुम को और तुम्हारे पूर्वजों को दिया था, इसकी दशा मैं शीलो की सी कर दूंगा। और जैसा मैं ने तुम्हारे सब भाइयों को अर्थात् सारे एप्रैमियों को अपने साम्हने से दूर कर दिया है, वैसा ही तुम को भी दूर कर दूंगा। (यिर्मयाह 7:13-15)

परमेश्वर अपने लोगों के प्रति अनुग्रहकारी, धैर्यवान और दयालु है; उसे क्रोधित करने में बहुत समय लगता है, परन्तु उसे क्रोधित किया जा सकता है। अतः हम पाते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को दण्ड देता है, परन्तु यह धैर्यपूर्ण और दया से भरा दण्ड होता है जो वह अपने लोगों पर लाता है।

वाचाओं के प्रभावों पर आधारित इस अध्याय में अब तक हमने वाचायी आदर्श और वाचायी दण्ड देखा है। हमारे विचार-विमर्श में, आइए अब हम तीसरे घटक को देखें: वाचायी आशीषें। परमेश्वर किस प्रकार अपनी आशीषे अपने लोगों पर उंडेलता है?

वाचायी आशीषें

क्या कभी आपकी ऐसी मित्रता किसी से रही है जहां दूसरा व्यक्ति आपको कभी छोड़ता नहीं? शायद आप कहीं दूर जगह पर चले गए और पत्र फिर भी आते रहें चाहे आप उनका जवाब देना भूल गए हों, या फिर जब फोन आते हों और आप इसी मित्र को पाते हों। ऐसे मित्र होना अच्छी बात है जो आपके पूरे जीवन भर आपके साथ रहे। यहोवा और इस्राएल के साथ उसके संबंध में यही बात थी। भविष्यवक्ता जानते थे कि परमेश्वर अपने लोगों को कड़ा दण्ड देगा, परन्तु वे यह भी जानते थे और इस बात की घोषणा करते थे कि परमेश्वर अपने वाचायी लोगों को कभी छोड़ेगा नहीं।

वाचायी जीवन के इस पहलू को देखने के लिए हमें दो बातों पर ध्यान देना होगा, ठीक वैसे ही जैसे हमने दण्ड के विषय में किया था। पहले हम वाचायी आशीष के प्रकारों को देखेंगे और फिर हम वाचायी आशीष की प्रक्रिया को देखेंगे।

आशीषों के प्रकार

आशीषें लोगों को तब मिलती हैं जब वे परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होने का प्रयत्न करते हैं। निसंदेह, परमेश्वर अपने लोगों से सिद्ध हाने की अपेक्षा नहीं करता, परन्तु वह यह अपेक्षा अवश्य करता है कि वे पूरी निष्ठा के साथ उसे खोजें, और उसके प्रति बलवा न करें। जब वाचा के लोग इस प्रकार विश्वासयोग्य रहते हैं, तो परमेश्वर उन्हें भरपूरी से आशीष देता है :

प्रकृति में आशीष

आशीष की पहली श्रेणी प्रकृति में आशीष है। जिस प्रकार मूसा ने प्रकृति में दण्ड की बात कही थी, उसी प्रकार उसने उन आशीषों के बारे में बात भी की जो प्रकृति के क्षेत्र में आएंगी। मूसा ने इस्राएल के समक्ष प्रकट किया कि परमेश्वर ने प्रकृति से जुड़ी अनेक आशीषें देने का वादा किया था यदि वे विश्वासयोग्यता के साथ उसकी सेवा करें। व्यवस्थाविवरण 4, 28, 30, और लैव्यवस्था 26 में कम से कम चार रूपों में इस प्रकार के उद्देश्य प्रकट होते हैं। पहला, मूसा ने भरपूर कृषि के बारे में बात की थी। यदि लोग प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे तो खेत फसलों से भरे रहेंगे। वह पशुधन में बढ़ोतरी की बात भी करता है। यदि लोग विश्वासयोग्यता के साथ प्रभु की सेवा करेंगे तो उनके जानवरों की संख्या में भी बढ़ोतरी होगी। अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली परमेश्वर के लोगों को मिलेगी। वे अच्छे स्वास्थ्य और निरोगी शरीर को प्राप्त करेंगे, और इसके अतिरिक्त, उनकी जनसंख्या भी बढ़ेगी। इस्राएलियों की संख्या भी बढ़ जाएगी। इस्राएलियों की संख्या बढ़ जाएगी जिससे वे प्रतिज्ञा की भूमि में भर जाएंगे।

प्रकृति में आशीषों की घोषणाओं से हमें अचंभित नहीं होना चाहिए। जब परमेश्वर ने मानवजाति की रचना की थी, तो उसने हमें स्वर्गलोक, अर्थात् अदन की वाटिका में रखा था। परन्तु फिर पाप के कारण परमेश्वर ने हमें वहां से निकाल दिया। जब परमेश्वर के वाचायी लोग उसके प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं तो वह उन्हें आशीषें, और प्रकृति की आशीषें देने की प्रतिज्ञा देता है ताकि वे उन बातों का अनुभव कर सकें जो परमेश्वर चाहता था कि उनके पास आरंभ से ही हो। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने कई रूपों में प्राकृतिक सम्पदा की आशीष के बारे में बात की। योएल 2:22-23 में हम पढ़ते हैं:

> हे मैदान के पशुओं, मत डरो, क्योंकि जंगल में चराई उगेगी, और वृक्ष फलने लगेंगे; अंजीर का वृक्ष और दाखलता अपना अपना बल दिखाने लगेंगी। हे सिय्योनियों, तुम अपने परमेश्वर यहोवा के कारण मगन हो, और आनन्द करो; क्योंकि तुम्हारे लिये वह वर्षा, अर्थात् बरसात की पहली वर्षा बहुतायत से देगा;

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> और पहले के समान अगली और पिछली वर्षा को भी बरसाएगा। (योएल 2:22-23)

लगभग इसी प्रकार जकर्याह ने अनुमान लगाया कि वे उसके दिनों में परमेश्वर की आशीषों को देखेंगे जब वे प्रभु की आज्ञा मानेंगे। जकर्याह 8:12 ये शब्द कहते हैं :

> क्योंकि अब शान्ति के समय की उपज अर्थात् दाखलता फला करेंगी, पृथ्वी अपनी उपज उपजाया करेगी, और आकाश से ओस गिरा करेगी। (जकर्याह 8:12)

युद्ध में आशीष

यद्यपि वाचायी आशीषों का पहला प्रकार प्राकृतिक सम्पदा पर केन्द्रित है, एक दूसरे प्रकार की श्रेणी बार-बार भविष्यवक्ताओं में प्रकट होती है, और यह है युद्ध में आशीष। जिस प्रकार वाचा के लोगों ने उस समय पराजय का अनुभव किया जब वे परमेश्वर के दण्ड के अधीन थे, उसी प्रकार उन्होंने तब विजय और शांति का अनुभव किया जब वे वाचा की आशीषों में पाए जाते थे। व्यवस्थाविवरण 4, 28, 30 और लैव्यवस्था 26 में यह कम से कम चार प्रकार से प्रकट होता है। पहला, मूसा परमेश्वर के लोगों से कहता है कि वे अपने शत्रुओं को हराएंगे। परन्तु इससे भी बढ़कर युद्ध का अंत होगा, दूसरे राष्ट्रों से शत्रुता समाप्त होगी और हर प्रकार के विनाश से राहत मिलेगी। और निसंदेह, उन सब बंदियों की रिहाई होगी जिन्हें प्रतिज्ञा की भूमि से बाहर ले जाया गया था।

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने प्रायः युद्ध में इस प्रकार की आशीषों के बारे में बात की थी। सुनिए किस प्रकार आमोस ने इस्राएल राष्ट्र के लिए सैन्य सफलता के एक अच्छे भविष्य के बारे में बात की थी। आमोस 9:11-12 में उसने बंधुआई के पश्चात् के समय के बारे में इन शब्दों को कहा था :

> उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई झोपड़ी को खड़ा करूंगा, और उसके बाड़े के नाकों को सुधारूंगा, और उसके खण्डहरों को फिर बनाऊंगा, और जैसा वह प्राचीनकाल से था, उसको वैसा ही बना दूंगा; जिस से वे बचे हुए एदोमियों को वरन् सब अन्यजातियों को जो मेरी कहलाती है, अपने अधिकार में लें, यहोवा जो यह काम पूरा करता है, उसकी यही वाणी है। (आमोस 9:11-12)

शत्रुता और मुश्किलों भरे संसार में भविष्यवक्ता आमोस ने घोषणा की कि दाऊद का घराना सारे दुष्ट शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा। और लगभग उसी प्रकार मीका ने 4:3 में घोषणा की थी कि इन विजयों के फलस्वरूप एक बड़ी शांति उत्पन्न होगी :

> वह बहुत देशों के लोगों का न्याय करेगा, और दूर दूर तक की सामर्थी जातियों के झगड़ों को मिटाएगा; सो वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल, और अपने भालों से हंसिया बनाएंगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरूद्ध तलवार फिर न चलाएगी। (मीका 4:3)

अतः हम इन अनुच्छेदों से देख सकते हैं कि भविष्यवक्ताओं ने स्वयं को परमेश्वर के अनुग्रह और आशीषों की बनाए रखा। यद्यपि भविष्यवक्ताओं के पास दण्ड और पाप के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ नकारात्मक था, फिर भी भविष्यवक्ताओं ने यह भी कहा कि पश्चाताप और सच्चाई प्रकृति और युद्ध में महान् आशीषों को प्रदान करेगी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जैसा कि हमने उन आशीषों के प्रकारों को देख लिया है जो परमेश्वर अपने लोगों को प्रदान करेगा, अब हमें उन प्रक्रियाओं पर भी ध्यान देना चाहिए जिनके माध्यम से ये आशीषें आएंगी।

आशीषों की प्रक्रिया

जिस प्रकार दण्ड की एक प्रक्रिया थी, उसी प्रकार आशीष की भी एक प्रक्रिया है। कम से कम तीन ऐसे सिद्धांत हैं जो दैवीय आशीष की प्रक्रिया को संचालित करते हैं: पहला, आशीषें अनुग्रह के द्वारा आती हैं; और फिर आशीषें अनेक स्तरों में आती हैं; और कि परमेश्वर की आशीषों का एक अन्त होता है।

अनुग्रह

प्रायः आधुनिक मसीहियों को यह भ्रम रहता है कि पुराने नियम में लोगों ने अपने उद्धार को या परमेश्वर के समक्ष अपनी धार्मिकता को स्वयं अर्जित किया है। परन्तु सत्य से बढ़कर कुछ नहीं होता। भविष्यवक्ताओं ने कार्यों के द्वारा लोगों को उद्धार का मार्ग नहीं दिखाया था। उन्होंने लोगों को पश्चाताप करने और परमेश्वर की दया को खोजने की बुलाहट दी। होशे 14:1 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> हे इस्राएल, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आ, क्योंकि तू ने अपने अधर्म के कारण ठोकर खाई है। . . . उस से कह, "सब अधर्म दूर कर; अनुग्रह से हम को ग्रहण कर; तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढ़ाएंगे"। (होशे 14:1-2)

ध्यान दीजिए कि होशे ने यह नहीं कहा था कि उसके पाठकों को कठिन मेहनत करके परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करना चाहिए। इसके विपरीत इस्राएल के विश्वायोग्य लोग जानते थे कि केवल परमेश्वर से मिलने वाली दया ही आशीषों को लेकर आएगी। उन्होंने मानवीय योग्यता के आधार पर नहीं बल्कि वाचायी आशीष के आधार पर क्षमा को पाने का प्रयास किया।

स्तर

दूसरा सिद्धांत जो वाचायी आशीषों को संचालित करता है वह यह है कि वे भिन्न-भिन्न स्तरों में आती हैं। जिस प्रकार दण्ड अलग-अलग स्तरों में आए, उसी प्रकार हम छोटी और बड़ी आशीषों के बारे में बात कर सकते हैं। पैमाने के निचले स्तर पर पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर से तुलनात्मक रूप से कम स्तर की दया के बारे में बात की। उदाहरण के तौर पर जैसे यशायाह ने हिजकिय्याह को बताया कि वह बीमार होने वाला और मरने वाला है, वैसे ही उसने राजा से एक छोटी आशीष की घोषणा भी की थी जब उसने उसे बताया था कि परमेश्वर उसे जीवित रहने देगा। यशायाह 38:5 में परमेश्वर ने कहा :

> जाकर हिजकिय्याह से कह कि तेरे मूलपुरूष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे हैं; सुन, मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बढ़ा दूंगा। (यशायाह 38:5)

काफी भविष्यवाणियां इन व्यक्तिगत आशीषों पर केन्द्रित थे। परन्तु अनेक बार भविष्यवक्ताओं ने अपना ध्यान उन महान् राष्ट्रीय आशीषों की ओर भी दिया जो परमेश्वर अपने लोगों को प्रदान करेगा। उदाहरण के तौर पर 701 में असीरियों ने यहूदा पर आक्रमण किया और यरूशलेम के फाटकों तक पहुंच गए थे। यशायाह 37:34-35 में भविष्यवक्ता ने स्पष्ट रूप से घोषणा की कि परमेश्वर इस बड़ी पराजय से उन्हें कब छुड़ाएगा :

> जिस मार्ग से वह आया है उसी से वह लौट भी जाएगा और इस नगर में प्रवेश न करने पाएगा, यहोवा की यही वाणी है। क्योंकि मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त, इस नगर की रक्षा करके उसे बचाऊंगा। (यशायाह 37:34-35)

यह परमेश्वर के लोगों के लिए एक बड़ी आशीष थी क्योंकि उनका अस्तित्व ही खतरे में था और परमेश्वर ने कहा था कि वह उन्हें युद्ध में विजय की आशीष देगा। जब हम पुराना नियम पढ़ते हैं तो हमें छोटी और बड़ी दोनों प्रकार की आशीषों के प्रति सचेत रहना चाहिए जिनकी घोषणा परमेश्वर ने अपने वाचायी लोगों से की थी।

अन्त

दैवीय अनुग्रह और आशीषों के स्तरों के अतिरिक्त एक तीसरा सिद्धांत भी है जो वाचायी आशीषों को संचालित करता है- वह है, बचे हुए लोगों की पुनरुथापना। पुराने नियम के भविष्यवक्ता मानते थे कि चाहे कितना भी बड़ा दण्ड क्यों न आ जाए, फिर भी कुछ बचे हुए लोग अवश्य रहेंगे। अब, ये बचे हुए लोग बहुत बड़ी संख्या में भी हो सकते हैं या फिर बहुत ही कम संख्या में भी हो सकते हैं, और यह इस बात पर निर्भर करता है कि लोग किस प्रकार प्रत्युत्तर देते हैं। परन्तु भविष्यवक्ताओं ने सदैव कहा कि परमेश्वर कुछ विश्वासयोग्य लोगों को बचाए रखेगा और उन्हीं लोगों पर आगे का निर्माण करेगा। उदाहरण के तौर पर, यिर्मयाह ने कहा कि यरूशलेम पूरी तरह से नाश किया जाएगा, परन्तु यिर्मयाह 5:18 में वह लोगों को आश्वस्त करता है कि कुछ लोग बचे रहेंगे :

> तौभी, यहोवा की यह वाणी है, उन दिनों में भी मैं तुम्हारा अन्त न करूंगा। (यिर्मयाह 5:18)

कुछ लोगों का बचे रहना महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन बचे हुए लोगों से ही परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए सबसे बड़ी आशीष लाने की प्रतिज्ञा की थी।

लैव्यवस्था 26 से हम पहले ही देख चुके हैं कि वाचा की ओर से सबसे बड़ा श्राप था, प्रतिज्ञा की भूमि से निकलकर बंधुआई में चले जाना। परन्तु लैव्यवस्था 26:40-45 और व्यवस्थाविवरण 4 एवं 30 में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह कुछ लोगों को बचाए रखेगा, उन बचे हुए लोगों को वापिस प्रतिज्ञा की भूमि में लाएगा और पहले से भी अधिक आशीषें देगा। सुनिए किस प्रकार मूसा इस विषय को व्यवस्थाविवरण 30:4-5 में रखता है :

> चाहे धरती के छोर तक तेरा बरबस पहुंचाया जाना हो, तौभी तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को वहां से ले आकर इकट्ठा करेगा। और तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उसी देश में पहुंचाएगा जिसके तेरे पुरखा अधिकारी हुए थे, और तू फिर उसका अधिकारी होगा; और वह तेरी भलाई करेगा, और तुझ को तेरे पुरखाओं से भी गिनती में अधिक बढ़ाएगा। (व्यवस्थाविवरण 30:4-5)

बचे हुए लोगों की पुनरुथापना का यह विषय सभी भविष्यवक्ताओं में पाया जाता है। उदाहरण के तौर पर यिर्मयाह ने सिखाया था कि बंधुआई के बाद परमेश्वर अपने बचे हुए लोगों को प्रकृति की बड़ी आशीषें देगा। यिर्मयाह 23:3 में यिर्मयाह ने परमेश्वर की ओर से ये शब्द कहे:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> तब मेरी भेड़-बकरियां जो बची हैं, उनको मैं उन सब देशों में से जिन में मैं ने उन्हें बरबस भेज दिया है, स्वयं ही उन्हें लौटा लाकर उन्हीं की भेड़शाला में इकट्ठा करूंगा, और वे फिर फूलें-फलेंगी। (यिर्मयाह 23:3)

लगभग इसी प्रकार बंधुआई के बाद बचे हुए लोग युद्ध में भी एक बड़ी आशीष प्राप्त करेंगे। भविष्यवक्ता योएल ने सिखाया था कि जब परमेश्वर के लोग वापिस आएंगे तो ये बचे हुए लोग एक बड़ी विजय और लम्बी शान्ति का अनुभव करेंगे। योएल 3:9 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> जाति जाति में यह प्रचार करो, युद्ध की तैयारी करो, अपने शूरवीरों को उभारो। सब योद्धा निकट आकर लड़ने को चढ़ें। (योएल 3:9)

परन्तु फिर 3:17 में हम इस्राएल की विजय के बारे में पढ़ते हैं :

> इस प्रकार तुम जानोगे कि यहोवा जो अपने पवित्र पर्वत सिय्योन पर वास किए रहता है, वही हमारा परमेश्वर है। और यरूशलेम पवित्र ठहरेगा, और परदेशी उस में होकर फिर न जाने पाएंगे। (योएल 3:17)

योएल ने युद्ध में एक ऐसी बड़ी विजय के बारे में बात की जो इस्राएल को सर्वदा के लिए सुरक्षित बना देगी।

पुराने नियम के सभी भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के लोगों के बचे हुओं की पुनरुथापना की आशा की थी। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी बंधुआई के बड़े दण्ड के बावजूद बचे हुए लोग पुनरुथापना की एक बड़ी आशीष को प्राप्त करेंगे।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने यह देखा है कि किस प्रकार भविष्यवक्ताओं ने वाचाओं के प्रभावों को देखा था और हमने तीन मुख्य विषय देखें हैं: पहला, दैवीय अनुग्रह और मानवीय जिम्मेदारी के आदर्श। और फिर हमने यह भी देखा है कि किस प्रकार भविष्यवक्ताओं ने व्यक्तिगत स्तर से लेकर पूरे राष्ट्र की बंधुआई के स्तर तक दण्ड की चेतावनी दी थी। और फिर अंत में हमने यह भी देखा है कि परमेश्वर अपने लोगों को छोटे रूपों में और फिर बचे हुए लोगों के जरिए छुड़ाएगा और बंधुआई के बाद एक बड़ी पुनरुथापना करेगा। इन विषयों, अर्थात् इन प्रभावों ने पुराने नियम के सभी भविष्यवक्ताओं को वह सब कहने में अगुवाई दी थी जो उन्होंने कहा था, और जब हम पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को पढ़ते हैं तो हमें इन्हीं विषयों से अगुवाई प्राप्त करनी चाहिए।